Q : रघुवंश के त्रयोदश सर्ग का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

Ans रावण का हनन कर भगवान राम लंका विजय करते हैं। इसके अनन्तर वे सीता, लक्ष्मण सुग्रीव एवं विभीषण आदि के साथ पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्यानगरी की ओर प्रस्थान करते हैं। मार्ग में जिन-जिन स्थानों से होकर वे आगे बढ़ते हैं, उन सबका वर्णन राम बड़ी भावुकता से सीता से करते चलते हैं। मार्ग में सर्वप्रथम समुद्र मिलता है। राम सीता से कहते हैं, कि देखो ! यह समुद्र मेरे द्वारा निर्मित सेतु से विभाजित होकर कितना सुन्दर एवं हृदयाकर्षक लगता है। इस समुद्र को हमारे पूर्वज सगरपुत्रों ने ही संवर्धित किया था। नानाविध अवस्थाओं को धारण करने वाला यह समुद्र अपने स्वरूप एवं परिमाण में कल्पनातीत है। यह अपने से मिलने वाली नदियों के मुख का चुम्बन करता हुआ अपना चुँबन नदियों को भी देता है। इस अवस्था में यह अत्यन्त मनोरम लगता है। इसके बाद राम समुद्र के मत्स्य, फेन, सर्प, शंख, बादल, तट तथा वायु का वर्णन करते हैं। समुद्र को पार करने के पश्चात् राम का विमान देव तथा मेघों के मार्ग से होकर आगे बढ़ता है। उसके बाद राम का विमान दण्डक वन के ऊपर से होकर गुजरता है। दण्डकवन को देखकर राम की भावुकता जग जाती है। उनकी पुरानी स्मृतियाँ एक-एक कर उनके समक्ष आ जाती हैं। इस वन की ओर संकेत करते हुए राम कहते हैं कि राक्षसों के मारे जाने के कारण आज यहाँ ऋषिगण निर्भिकता से रहने लगे हैं। इसी वन के एक स्थल की ओर संकेत कर राम सीताजी से कहते हैं कि यह वही जगह है जहाँ तुम्हारी खोज के क्रम में तुम्हारा एक नूपुर हमें मिला था। इस वन की लताओं और हरिणियों ने तुम्हारे जाने का मार्ग बतलाया था। विमान के आगे बढ़ने पर माल्यवान पर्वत मिलता है। राम सीता से कहते हैं कि

यहीं पर तुम्हारे वियोग में मैंने आँसू बहाये थे। तुम्हा वियोगावस्था में यहाँ की सुखद तथा रमणीय वस्तुएँ भी हमें अप्रिय लगती थी। वर्षाकाल में यहाँ पर निवास करते हुए मुझे तुम्हारे सुखद आलिंगनो की याद पीड़ा-दायिनी बन गई थी। मैंने घनगर्जनों को जिस किसी तरह सहन किया। यहीं पर कन्दली पुष्पों को देखकर मुझे तुम्हारी सुन्दर आँखों की याद आ गई थी। मुझे बहुत दुख का अनुभव हुआ था। विमान के आगे बढ़ने पर पम्पा सरोवर दिखाई पड़ता है। इसकी ओर संकेत करते हुए राम सीता से कहते हैं कि यहाँ प्रेम का परस्पर आदान-प्रदान करते हुए चकवा-चकवी के जोड़े आनन्द कर रहे थे। उन्हें प्रेमालाप करते देखकर मुझे तुम्हारी याद सताने लगी थी। देखो! यह वही अशोकलता है जिसका मैंने भरपूर आलिंगन किया था। यह समझकर कि तुम ही हो। देखो! यह गोदावरी नदी है। अब पंचवटी की छटा देखो। इसी पंचवटी में तुमने अपने हाथों से आम्रपादपों को सींचा था। तुमको यह अच्छी तरह याद होगा कि इसी पंचवटी में मैंने तुम्हारी गोद में सोकर मृगया की थकान दूर करता था। अब अगस्त्य मुनि का आश्रम तथा शातकर्णि मुनि का पंचाप्सर तीर्थ आ गए। यहाँ संगीत की मधुर ध्वनि निनादित हो रही है। अब तपोरत सुतीक्ष्ण मुनि दिखाई पड़ रहे हैं और आगे शरभंग मुनि का आश्रम है। पुष्पक विमान आगे बढ़ते हुए चित्रकूट के समीप आ जाता है। यहाँ चित्रकूट पर्वत स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। इसी के समीप प्रवाहित मंदाकिनी नदी है। प्रवाहयुक्त यह नदी ऐसी लगती है मानो पृथ्वी के गले में सुशोभित मुक्तावली हो। देखो! यह वही तमालवृक्ष है, जिसके कोमल नव पल्लवों से मैं तुम्हारे कपोलों की शोभा प्रदान करने वाले अलंकरणों को बनाया करता था। अब अत्रि मुनि का आश्रम है। इस आश्रम के वृक्ष भी समाधिस्थ से शांत और गंभीर लगते हैं।

पुष्पक विमान तीव्र गति से अयोध्या की

और बढ़ता जा रहा था। इस बीच प्रयाग का अक्षयवट दिखाई देने लगा। गंगा-यमुना का संगम भी दृष्टिपथ में आ गया। राम ने गंगा-यमुना के संगम का बड़ा ही मनोरम एवं भव्य वर्णन किया।

विमान गतिशील है। रास्ते में शृंगवेरपुर आता है। उसके बाद ही सरयू नदी के दर्शन होते हैं। राम सरयू के गौरव का गान करते हैं। सरयू को देखकर वे अत्यन्त भावुक हो जाते हैं। उनको ऐसा लगता है मानो सरयू नदी अपनी तरंगों से उनका उसी प्रकार आलिंगन कर रही है जिस प्रकार माता प्रवास से लौटे हुए पुत्र का अपने हाथों से आलिंगन करती है। विमान अब अयोध्या के अभिमुख होता जा रहा है। आगे बढ़ने पर धूलि उड़ती हुई दिखाई पड़ती है। उसे देखकर राम सीता से कहते हैं कि मेरे आगमन की सूचना पाकर भरत स्वागतार्थ आ रहे हैं। थोड़ी ही देर बाद भरत मंत्रियों के साथ आते हुए दिखलाई पड़ते हैं। राम सीता से भरत की महत्ता की चर्चा करते हैं। राम की इच्छा समझकर विमान आकाश से नीचे उतरता है। विभीषण द्वारा प्रदर्शित सोपान-मार्ग से राम सुग्रीव के हाथों का सहारा लेकर विमान से उतरते हैं। वे सर्वप्रथम कुलगुरु वशिष्ठ को सादर प्रणाम करते हैं। तत्पश्चात् भरत द्वारा अर्पित अर्घ्य को स्वीकार कर उनका आलिंगन करते हैं उसके बाद मंत्रियों से कुशलक्षेम पूछकर उन्हें अनुगृहीत करते हैं। राम के द्वारा सुग्रीव तथा विभीषण का परिचय प्राप्त कर भरत उन्हें प्रणाम करते हैं। फिर भरत तथा लक्ष्मण का मिलन होता है। इसके बाद जुलूस की तैयारी होती है। राम की आज्ञा से वानरसेनाधिपति हाथी पर सवार होते हैं। अनुगामियों के साथ विभीषण रथ पर बैठ जाते हैं। राम, भरत तथा लक्ष्मण पुष्पक विमान पर बैठ जाते हैं। विमान में भरत जानकी के चरणों की वन्दना करते हैं। जुलूस अयोध्या की ओर चल पड़ता है। अयोध्या के भवन में पहुँचकर जुलूस रुक जाता है। जहाँ शत्रुघ्न पहले से ही डेरा, तम्बू आदि की सुन्दर व्यवस्था किए हैं। सपरिवार ठहर जाते हैं। यहीं त्रयोदश सर्ग समाप्त हो जाता है।